नाट्यकला (385) आदर्शप्रश्नपत्र

परीक्षासमयावधि (Time) 2 घंटे(2 Hrs) पूर्णाङ्क (Full Marks) - 60

निर्देश:-

1.इस प्रश्न पत्र में 31 प्रश्न हैं जिनमें [A] भाग में 12, [B] भाग में 09, [C] भाग में 06, [D] 02 और [E] भाग में 02 शामिल हैं।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

3.प्रत्येक प्रश्न के दाईं ओर प्रश्न के लिए निर्धारित अंक दिया गया है।

4.भाग [A] में प्रश्न संख्या 01 से 12 - वस्तुनिष्ठ/बहुविकल्पीय प्रकार के प्रश्न (MCQs) दिये गए हैं प्रत्येक एक अंक के होंगे। इनमें से प्रत्येक प्रश्न में दिए गए चार विकल्पों में से सबसे उपयुक्त विकल्प चुनें और लिखें। इनमें से कुछ प्रश्नों पर एक आंतरिक विकल्प प्रदान किया गया है। ऐसे प्रश्नों में दिए गए विकल्पों में से केवल एक ही करना चाहिए।

5.भाग [B] में प्रश्न संख्या 13 से 21 - वस्तुनिष्ठ प्रश्न/मिलान, रिक्त स्थान, सत्य-असत्य आदि दिए गए हैं। प्रत्येक प्रश्न दो अंक का है। निर्देशानुसार उत्तर दें।

6. भाग [C] में प्रश्न संख्या 22 से 27 तक अतिलघूत्तरीय प्रश्न दिए गए हैं। प्रत्येक प्रश्न 2 अंक का है। निर्देशानुसार उन्हें 30 से 50 शब्दों की सीमा में समाहित किया जाना चाहिए।

7.भाग [D] में प्रश्न संख्या 28 से 29 तक लघूत्तरीय प्रश्न हैं।प्रत्येक प्रश्न 3 अंक का है।निर्देशानुसार उन्हें 50 से 80 शब्दों की सीमा में समाहित किया जाना चाहिए।

8.भाग [E] में प्रश्न संख्या 30 से 31 तक दीर्घ उत्तरीय प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न 6 अंक का है। निर्देशानुसार उन्हें 80 से 100 शब्दों की सीमा में समाहित किया जाना चाहिए।

A	**बारह प्रश्नों में सही विकल्प का चयन करें।** 1x12 = 12	
1.	i) यह उद्दीपन विभाव नही कहा का सकता क) चन्द्रोदय ख) वस्त्राभूषण ग) नायिका घ) ऋतु अथवा ii) यह अनुभाव नही है- क) कटाक्ष ख) भुजाक्षेप ग) रोमांच घ) चन्द्रोदय	1
2.	विश्वनाथ के अनुसार रस है क) सत्वोद्रेग ख) रजोद्रेग ग) तमोद्रेग घ) भावोद्रेग	1
3.	i) हर्ष, आवेग, जडता इत्यादि हैं- क) विभाव ख) अनुभाव ग) संचारीभाव घ) उद्दीपन विभाव अथवा ii) सात्विक भावों की संख्या है- क) पाँच ख) सात ग) आठ घ) दस	1
4.	रूपक का प्रकार नहीं है- क) भाण ख) प्रहसन ग) डिम घ) खंडाकाव्य	1
5.	i) उत्साह, जुगुप्सा, निर्वेद आदि हैं- क) संचारी भाव ख) आलंबन विभाव ग) उद्दीपन विभाव घ) स्थयी भाव अथवा ii) रंगशाला का निर्माण किया जा सकता है- क) आयताकर ख) वर्गाकार ग) त्रिकोणाकार घ) उक्त सभी	1
6.	नाट्यशास्त्र के प्रणेता हैं- क) कपिल मुनि ख) पतंजलि ग) भरतमुनि घ) पाणिनि	1
7.	i) कालिदास का सर्वश्रेष्ठ नाटक है- क) विक्रमोर्वशीयम् ख) अभिज्ञानशाकुन्तलम् ग) मालविकाग्निमित्रम् घ) किरातार्जुनीयम् अथवा ii) अभिज्ञानशाकुन्तलम् के कथानक का मूल स्रोत है- क) महभारत ख) रामायण ग) उपनिषद् घ) भगवद्गीता	1
8.	अभिज्ञानशाकुन्तलम् में अंकों कुल संख्या है- क) दस ख) बारह ग) सात घ) छः	1
9.	i) अभिज्ञानशाकुन्तलम् का पात्र नहीं है- क) मारीच ख) शारद्वत ग) गौतमी घ) दमयन्ती अथवा ii) दुष्यन्त की नायक के रूप में प्रकृति है- क) धीरोदात्त ख) धीरोद्धत ग) धीरप्रशान्त घ) धीरललित	1
10.	मृच्छकटिक किस प्रकार का रूपक है- क) नाटक ख) प्रकरण ग) व्यायोग घ) भाण	1

11.	i) वररुचि के अनुसार कवि शूद्रक का काल है- क) ई.पू. ३०० ख) ई.पू. ५०० ग) ई.पू. ७०० ई.पू. १००० अथवा ii) मृच्छकटिकम् रूपक की नायिका है- क) धूता ख) शकुन्तला ग) वसन्तसेना घ) रदनिका	1
12.	मृच्छकटिकम् में शकार है- क) नायक ख) प्रतिनायक ग) विदूषक घ) सूत्रधार	1

13.	उचित विकल्पों का मिलान करें	½ x4= 2
	क स्तम्भः	ख स्तम्भः
1.	i) प्रवेशिकी	क) पात्रों के मंच से प्रस्थान के लिए
	ii) आक्षेपिका	ख) पात्रों के मंच पर प्रवेश के लिए
	iii) नैष्क्रमणी	ग) पात्रों को लघु विराम देने हेतु
	iv) अन्तरा	घ) रसों के परिवर्तन के लिए
	अथवा	
2.	i) ख्याल	क) कर्नाटक
	ii) माँच	ख) राजस्थान
	iii) स्वांग	ग) मालवा
	iv) मुकाम पद्धति	घ) हरियाणा

14.	अधोलिखित वाक्यों में सत्य या असत्य का निर्धारण करें -	½ x4= 2
1	i)	संगीत का संबन्ध नाद ब्रह्म से माना गया है।
	ii)	पाणिनि के अनुसार नटो के धर्म को नाट्य कहा गया है।
	iii)	मुगल काल में अजन्ता एवं अलोरा के भित्तिचित्रों का विकास हुआ।
	iv)	अमरावती मूर्तिकला शैली का विकास कश्मीर में हुआ।
		अथवा
2	i)	शुद्ध देसी चित्रकला शैली का संबन्ध मथुरा से है।
	ii)	तंजौर का बृहदीश्वर मन्दिर द्रविड शिल्पकला का उदाहरण है।
	iii)	बेसर शैली का संबन्ध पाश्चत्य स्थापत्य से है।
	iv)	भरतमुनि के अनुसार आकार की दृष्टी से रंगशाला चार प्रकार की हो सकती है।

15.	उचित शब्द से रिक्त स्थान की पूर्ति करें। (कोई चार) ½ x4= 2
	I. पाश्चात्य दर्शन में सौन्दर्य कि आत्मिक व्याख्या .... का दृष्टिकोण है।
	II. प्लेटो की दृष्टि में सुन्दर वही है, जो .... आनन्दप्रद है।
	III. .... रसगंगाधर के लेखक है।
	IV. भवभूति की दृष्टि से .... ही एकमात्र रस है।
	V. अभिनवगुप्त ने सौन्दर्यशास्त्र तथा .... दर्शन के सिद्धान्तों की परस्पर व्याख्या की है।

16.	उचित विकल्पों का मिलान करें ½ x4= 2	
	क स्तम्भः	ख स्तम्भः
1.	i) आङ्गिक अनुभाव	क) कृत्रिम वेष-रचना
	ii) वाचिक अनुभाव	ख) अयत्नज अंगविकार
	iv) आहार्य अनुभाव	ग) भ्रू-विक्षेप
	iv) सात्विक अनुभाव	घ) वाग्व्यापार
	अथवा	
2.	i) रति	क) अद्भुत रस
	ii) हास	ख) करुण रस
	iii) शोक	ग) हास्य रस
	iv) विस्मय	घ) शृङ्गार रस

17.	उचित विकल्पों का मिलान करें ½ x4= 2	
	क स्तम्भ	ख स्तम्भ
1.	i) नाट्यशास्त्र अध्याय 29	क) वाद्य प्रयोग
	ii) नाट्यशास्त्र अध्याय 29	ख) सुषिर वाद्य
	v) नाट्यशास्त्र अध्याय 30	ग) ताल वाद्य
	iv) नाट्यशास्त्र अध्याय 30	घ) रस जाति लक्षण
	अथवा	
2.	i) रति	क) विस्मिता दृष्टि
	ii) हास	ख) दीना दृष्टि
	iii) शोक	ग) हृष्टा दृष्टि
	iv) विस्मय	घ) स्निग्धा दृष्टि

18.	उचित शब्द से रिक्त स्थान की पूर्ति करें। (कोई चार) ½ x4= 2
	I. संयोग तथा वियोग ये दो .... रस के भेद हैं।
	II. करूण का 'निर्वेद' .... भाव है।
	III. धृति, स्मृति ये .... रस के संचारी भाव हैं।
	IV. युद्धवीर, दानवीर तथा धर्मवीर ये तीन .... रस के प्रमुख भेद हैं।
	V. नवम रस के रूप में कुछ आचार्यों ने .... रस को स्वीकार किया है।

19.	अधोलिखित वाक्यों में सत्य या असत्य का निर्धारण करें - (कोई चार) ½ x4= 2	
1	i)	तोल्काप्पियम् का संबंध तमिल भाषा के व्याकरणा एवं काव्यशास्त्र से है।
	ii)	कुडियट्टम् का विकास ओडिशा में हुआ।
	iii)	आचार्य भारत ने हाथ से प्रस्तुत की जाने वाली बीस चेष्टाओं का उल्लेख किया है।
	iv)	अभिनय में रसों का कोई महत्व या सन्दर्भ नहीं होता।
	अथवा	
2	i)	जी. वेणु कुडियाट्टम को लेकर अनेक वर्षों तक सक्रिय रहे।
	ii)	'सोलादिकारम्' तोल्काप्पीयम् का एक भाग है।
	iii)	सेंटामिल का संबन्ध ब्रजभाषा से है।
	iv)	सदानम् कृष्णनकुट्टी का संबंध कथकली से है।

20.	अधोलिखित वाक्यों में सत्य या असत्य का निर्धारण करें - (कोई चार) ½ x4= 2	
1	i)	थीम म्युजिक जो नाटक में प्रायः आलाप के रूप में प्रस्तुत किया जाता है।
	ii)	नाटक के दृश्यो में लगने वाले समय को लिंकिंग मूजिक से भरा जाता है।
	iii)	इंट्रो म्युजिक किसी पात्र के मनोभावों को व्यक्त करने के किए होता है।
	iv)	ढोलक या ड्रम की लय की तीवता से नाटक में मूवमेंट की तीव्रता दिखाई जाती है।
	अथवा	
2	i)	नाटक यदि वीर रस का हो तो थीम म्युजिक जोशीला होगा।
	ii)	इफेक्ट म्यूजिक नाटक में परिस्थिति के अनुकूल प्रभाव उत्पन्न करता है।
	iii)	कैरेक्टर म्युजिक नाटक के दृश्यों को एक दूसरे से जोडने के लिए उपयोगी होता है।

	iv)	नाटक के दृश्य में किसी देवता के प्रवेश पर बजने वाला संगीत कैरेक्टर म्युजिक का उदाहरण है।

21.	उचित शब्द से रिक्त स्थान की पूर्ति करें। (कोई चार) ½ x4= 2	
	I.	पारसी रंगमच का आरंभ .... शहर से हुआ।
	II.	पारसी नाटक कंपनियों ने अभिनय और रंगमंचीय तकनीको को .... से ग्रहण किया।
	III.	.... ने गीत 'गीत गोविन्द' की रचना की।
	IV.	सफद भाँड ने कश्मीर में '.............. जश्न' इस
	V.	आचार्य भारत ने चार प्रकार के वाद्यों की चर्चा की है; तत्, अनवद्ध, घन तथा...........।

[B] अधोलिखित में छः प्रश्नों के निर्देशानुसार उत्तर लिखें। 2x6=12

22. नायक के सात्विक गुण कितने व कौन से होते हैं?

अथवा

विश्वनाथ के अनुसार अभिनय की परिभाषा लिखें।

23. प्रतिहारी क्या होती है, संक्षेप में लिखें।

अथवा

स्वाधीनपतिका नायिका की परिभाषा लिखें।

24. कालिदास की रचनाओं के नाम लिखें।

25. मृच्छकटिकम् के लेखक का नाम तथा काल लिखें।

26. मृच्छकटिकम् किस विधा का रूपक है तथा इसके अंको की संख्या लिखें।

27. प्रासादिकी ध्रुवगान क्या होता है? लिखें।

[C] दो प्रश्नों के निर्देशानुसार उत्तर दें। 3x2=6

28. भट्टलोल्लट का उत्पत्तिवाद इस पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखें।

अथवा

श्रीशंकुक के अनुमितिवाद पर संक्षेप में प्रकाश डालें।

29. रस के स्वरूप पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखें।

[D] दो प्रश्नों के निर्देशानुसार उत्तर दें। 6x2=12

30. विदूषक की विशेषताओं को विस्तार से लिखें।

अथवा

सामान्यतः नायिका के भेदों पर प्रकाश डालें।

31. नौटंकी इस नाट्य विधा पर विस्तृत टिप्पणी लिखें।

नाट्यकला (385) MS

A	बारह प्रश्नों में सही विकल्प का चयन करें। 1x12 = 12	
1.	i) ग) नायिका अथवा ii) घ) चन्द्रोदय	1
2.	क) सत्वोद्रेग	1
3.	i) ख) अनुभाव अथवा ii) ग) आठ	1
4.	घ) खंडाकाव्य	1
5.	i) घ) स्थयी भाव अथवा ii) घ) उक्त सभी	1
6.	ग) भरतमुनि	1
7.	i) ख) अभिज्ञानशाकुन्तलम् अथवा ii) क) महभारत	1
8.	ग) सात	1
9.	i) घ) दमयन्ती अथवा ii) क) धीरोदात्त	1
10.	ख) प्रकरण	1
11.	i) क) ई.पू. ३०० अथवा ii) ग) वसन्तसेना	1
12.	ख) प्रतिनायक	1

13.	उचित विकल्पों का मिलान करें ½ x4= 2	
	क स्तम्भः	ख स्तम्भः
1.	i) प्रवेशिकी	ख पात्रों के मंच पर प्रवेश के लिए
	ii) आक्षेपिका	घ) रसों के परिवर्तन के लिए
	iii) नैष्क्रमणी	क) पात्रों के मंच से प्रस्थान के लिए

	iv) अन्तरा	ग) पात्रों को लघु विराम देने हेतु
	अथवा	
2.	i) ख्याल	ख राजस्थान
	ii) माँच	ग) मालवा
	iii) स्वांग	घ) हरियाणा
	iv) मुकाम पद्धति	क) कर्नाटक

14.	अधोलिखित वाक्यों में सत्य या असत्य का निर्धारण करें - ½ x4= 2	
1	i)	सत्य
	ii)	सत्य
	iii)	असत्य
	iv)	असत्य
	अथवा	
2	i)	सत्य
	ii)	सत्य
	iii)	असत्य
	iv)	असत्य

15.	उचित शब्द से रिक्त स्थान की पूर्ति करें। (कोई चार) ½ x4= 2
	I. हीगेल
	II. आनन्दप्रद
	III. जगन्नाथ
	IV. करुण
	V. शैव/पाशुपत

16.	उचित विकल्पों का मिलान करें ½ x4= 2	
	क स्तम्भः	ख स्तम्भः
1.	i) आङ्गिक अनुभाव	ग) भ्रू-विक्षेप

	ii) वाचिक अनुभाव	घ) वाग्व्यापार
	iv) आहार्य अनुभाव	क) कृत्रिम वेष-रचना
	iv) सात्विक अनुभाव	ख) अयत्नज अंगविकार
अथवा		
2.	i) रति	घ) शृङ्गार रस
	ii) हास	ग) हास्य रस
	iii) शोक	ख) करुण रस
	iv) विस्मय	क) अद्भुत रस

17. उचित विकल्पों का मिलान करें ½ x4= 2		
	क स्तम्भ	ख स्तम्भ
1.	i) नाट्यशास्त्र अध्याय 28	ख) सुषिर वाद्य
	ii) नाट्यशास्त्र अध्याय 29	ख) वाद्य प्रयोग
	v) नाट्यशास्त्र अध्याय 30	घ) रस जाति लक्षण
	iv) नाट्यशास्त्र अध्याय 31	ग) ताल वाद्य
अथवा		
2.	i) रति	घ) स्निग्धा दृष्टि
	ii) हास	ग) हृष्टा दृष्टि
	iii) शोक	ग) दीना दृष्टि
	iv) विस्मय	क) विस्मिता दृष्टि

18.	उचित शब्द से रिक्त स्थान की पूर्ति करें। (कोई चार) ½ x4= 2
	I. शृंगार
	II. स्थायी
	III. वीर रस
	IV. वीर रस
	V. शांत रस

19.	अधोलिखित वाक्यों में सत्य या असत्य का निर्धारण करें - (कोई चार) ½ x4= 2

1	i)	सत्य
	ii)	असत्य
	iii)	सत्य
	iv)	असत्य
	अथवा	
2	i)	सत्य
	ii)	सत्य
	iii)	असत्य
	iv)	सत्य

20.	अधोलिखित वाक्यों में सत्य या असत्य का निर्धारण करें - (कोई चार) ½ x4= 2	
1	i)	सत्य
	ii)	सत्य
	iii)	असत्य
	iv)	सत्य
	अथवा	
2	i)	सत्य
	ii)	सत्य
	iii)	असत्य
	iv)	सत्य

21.	उचित शब्द से रिक्त स्थान की पूर्ति करें। (कोई चार) ½ x4= 2
	I. बंबई/मुंबई
	II. पुरुषों
	III. जयदेव
	IV. भांड जश्न
	V. सुषिर

[B] अधोलिखित में छः प्रश्नों के निर्देशानुसार उत्तर लिखें। 2x6=12

22. नायक के आठ सात्विक गुण हैं: महासत्व, अत्यंत गंभीर, क्षमावान्, अविकत्थन, स्थिर, निगूढ़ अहङ्कार, दृढ़व्रती| नायक के सात्विक गुणों में शामिल हैं।

अथवा

कविराज विश्वनाथ ने सहित्य दर्पण के छठे परिच्छेद के आरम्भ में कहा है: 'भवेदभिनयोSवस्थानुकार:' अर्थात् अवस्था का अनुकरण ही अभिनय कहलाता है ।

23. राजा के निकट रहने वाली और सन्धि विग्रह आदि राज विषयक कार्यों की राजा को सूचना देने वाली सेविका प्रतिहारी कहलाती है।

अथवा

वह नायिका जिसका पति उसके वश में हो, पति को वशीभूत करनेवाली नायिका, साहित्य में इसके चार भेद कहे गए हैं; यथा—मुग्धा, मध्या, प्रौढ़ा, और परकीया ।

24. महाकवि कालिदास की सात रचनाएं हैं: ऋतुसंहार, मेघदूत, कुमारसंभव, रघुवंश, मालविकाग्निमित्र, विक्रमोर्वशीयम्, अभिज्ञानशाकुन्तल ।

25. मृच्छकटिकम् के लेखक का नाम शूद्रक तथा काल के विषय में अनेक मत हैं। इन्हें ईसा पूर्व तृतीय शती से लेकर ईसा की पंचम शती के बीच मे माना जाता है।

26. मृच्छकटिकम् प्रकरण विधा का रूपक है तथा इसके अंको की संख्या दस है।

27. किसी हाल ही में घटित घटना को तुरंत गीत के रूप में प्रकट किया जाए तो यह रसों में अंतर ला देता है जिससे दर्शकों का मन प्रफुल्लित हो उठता है ऐसे गीत को प्रासदिकी कहते हैं। इसमें पात्र के मन में चल रही मनःस्थिति को दर्शको के सामने गीत के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है।

[C] दो प्रश्नों के निर्देशानुसार उत्तर दें। 3x2=6

28. इस मत के अनुसार निष्पत्ति से भरत मुनि का आशय उत्पत्ति और संयोग से सम्बन्ध था; विभाव कारण थे और रस उनके कार्य। इस मत का मानना है कि रस नायक इत्यादि में रहता है। अर्थात् रस की वास्तविक अनुभूति तो मूल नायक इत्यादि को होती है, नाटक में हिस्सा लेने वाले पात्र तो मात्र उसका अभिनय करते हैं। इसे आरोपवाद अथवा उपचितवाद के नाम से भी जाना जाता है।।

अथवा

श्रीशंकुक ने भरत के रससूत्र की इन्होंने जो व्याख्या की है वह "अनुमितिवाद" नाम से प्रसिद्ध है। भट्ट लोल्लट के उत्पत्तिवाद का तथा सहृदयों में रसानुभव न माननेवाले सिद्धांत का इन्होंने सर्वप्रथम खंडन किया है। इन्होंने विभाव आदि साधनों और रसरूप साध्य में अनुमाप्यअनुमापक भाव की कल्पना की है और रस का आस्वाद अनुमान द्वारा अनुमेय या अनुमितिगम्य बताया है। इन्होंने रस की स्थिति सहृदयों या सामाजिकों में मानी है। "चित्रतुरगादि न्याय" की इनकी

विवेचना के अनुसार नट सच्चे राम नहीं हैं, वे चित्र में लिखे अश्व की तरह हैं। जैसे अश्व के चित्र को देखकर उसका अनुभव होता है, वैसे ही नट के अभिनयात्मक रूप को देखकर सहृदयों को अनुभव होता है। इस प्रकार शंकुक ने रस की स्थिति सहृदयों या सामाजिकों में मानी है।

29. साहित्य-दर्पण के रचयिता आ. विश्वनाथ ने किया हुआ रस-स्वरूप का विवेचन इस प्रकार हैl आ. विश्वनाथ ने उनके संकृत श्लोक में कहा है –

"सत्त्वोद्रेकादखंडस्वप्रकशानंदचिन्मय: वेदांतर स्पर्श्शून्यो ब्र्ह्मस्वादसहोदर: ll"

"लोकोत्तरचमत्कारप्राण: कैश्चित्प्रमातृभि: l स्वाकारवदभिनत्वेनायमास्वाध्यते रस: ll"

1. रस अखण्ड हैl 2. रस स्वयं प्रकाशी है l 3. रस का अपने अभिन्न रूप में आस्वादन 4. रस का चिन्मय रूप 5. रस का वेदांतर स्पर्शशून्य स्वरूप 6. रस का ब्रम्हास्वाद सहोदर स्वरूप 7. रस की प्राणवत्ता लोकोत्तर चमत्कार 8. रस की लोकोत्तर आल्हद्मयता l इसी के साथ इन्होंने यह भी कहा कि प्रमाता (सहृदय) द्वारा रस तभी आस्वादित किया जाता है, जब उसके सत्त्व गुण का उद्रेक होता है l

[D] दो प्रश्नों के निर्देशानुसार उत्तर दें। 6x2=12

30. यह हास्य प्रधान पात्र होता है जो विचित्र बातें कहकर नाटक के नायक का सदैव मनोरञ्जन करता है और विशेष रूप से प्रणय आदि कार्यों में नायक की सहायता करता है। विदूषक मात्र हास्य पात्र. ही नहीं होता वह अपने बौद्धिक चातुर्य से नायक को आपत्तियों से बचाता भी है। विदूषक प्रायः स्वादिष्ट भोजन प्रिय होता है अतः इसे 'पेटू' भी कहा जा सकता है। विदूषक का लक्षण इस प्रकार है-

कुसुमवसन्ताद्यधिः कर्मवयुर्वेष भाषाद्यैः । हास्यकरः कलहरति विदूषकः स्यात् स्वकर्मज्ञः
अर्थात् जो अपने शारीरिक हाव-भाव - भाषण से दर्शकों को हंसाता है वह विदूषक कहलाता है।
'स्वप्नवासवदत्तम' में वसन्तक नामक विदूषक है।

अथवा

भरत के अनुसार नायिका के आठ भेद हैं : वासकज्जा, विरहोत्कंठिता, स्वाधीनपतिका, कलहांतरिता, खंडिता, विप्रलब्धा, प्रोषितभर्तृका, अभिसारिका। परवर्ती लेखकों के अनुसार, जिसे "प्रकृति-भेद" कहा गया है, नायिका तीन प्रकार की होती है: उत्तमा, मध्यमा, अधमा। अग्निपुराण के वर्गीकरण के अनुसार : स्वकीया, परवीकया, पुनर्भू, सामान्या। काव्यालंकार तथा शृंगारतिलक में एक षोडष भेद वर्गीकरण प्रस्तुत किया, जिसे परवर्ती लेखकों द्वारा सर्वाधिक प्रधानता दी गई। यह वर्गीकरण इस प्रकार है :

नायिका : स्वकीया, परकीया, सामान्या। स्वकीया : मुग्धा, मध्या, प्रगल्भा। मध्या तथा प्रगल्भा : धीरा, मध्या (धीराधीरा), अधीरा। मध्या तथा प्रगल्भा; पुन: ज्येष्ठा, कनिष्ठा। परकीया : ऊढा, अनूढा (कन्या)। इस षोडश भेद वर्गीकरण को (मुग्धा-एक, मध्या-छः, प्रगल्भा-छः, परकीया-दो, सामान्या-एक, कुल षोडश भेद)

31. लकिक लोकनाट्य में नौटंकी एक महत्वपूर्ण लोकनाट्य है जो कि मुख्य रूप से अपनी गायकी पद्धति और नक्कारा के प्रयोग के लिए जानी जाती है। नौटंकी में गायकी के लिए मुख्य रूप से छंद, दोहा, चौबोला, दौड़ और बह्रेतवील का बहुतायत में प्रयोग किया जाता है। इसके अलावा गजल, लावणी, ठुमरी और कव्वाली का भी प्रयोग होता है। दोहा और चौबोला छंद मुख्य कथा को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इन शब्दों में विशेष रूप से बह्रेतबील अभिनय को नाटकीय बनाता है और गति प्रदान करता है। इसकी लय और कठान एक तरह से नौटंकी के गायकों के कंठ की परीक्षा है। नौटंकी का मुख्य वाद्य यंत्र नक्कारा है। यह भी माना जाता है कि नौटंकी के साथ नक्कारा वादन का कौशल मुख्य रूप से जुड़ा हुआ है। यह नक्कारा कलाकारों के छंद गायन में संगत ही नहीं करता बल्कि अपनी विशिष्ट टंकार के साथ गायन का साथ देता है और अभिनय को ऊर्जावान बना देता है। इसलिए नौटकी में गायन या संवाद के बाद नक्कारे का एक विशिष्ट तरीके से कौशल प्रस्तुत किया जाता है। यह नौटंकी प्रदर्शन के पूरे समा को बांध लेता है और इसी के कारण दर्शक नौटंकी के दीवाने हो जाते हैं। इसके साथ ही साथ ढोलक हारमोनियम और सारंगी को भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है ।